VOL- VII ISSUE- I JANUARY 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में समाज और संस्कृति

जाहिद
शोधार्थी, पी–एच.डी. (हिन्दी विभाग)
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास
पंजीकृत संख्या : Hy/Ph.d.(Hindi)/ 18/ 2018

प्रवासी हिंदी साहित्य (कथा–साहित्य) में एक विशिष्ट शख्सियत का नाम अभिमन्यु अनत हैं। प्रवासी साहित्य की गुणात्मक तथा परिमाणात्मक अभिवृद्धि में उनका विशिष्ठ योगदान रहा। विदेशी/प्रवासी भूमि में हिंदी भाषा तथा साहित्य को पुष्पित एवं पल्लवित करने में उनकी महती भूमिका रही। मूलतः कथाकार होने के बावजूद कविता, नाटक आदि में अपनी साहित्यिक सक्रियता दिखाई।

साहित्य के इस विशाल सागर में अनेक शाखाओं में एक शाखा प्रवासी हिंदी साहित्य भी है, जो लगातार अपनी रचनाधर्मिता से हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने तथा लोकप्रियता के शिखर पर ले जाने में एवं प्रवासी की संस्कृति, रहन–सहन एवं उस भू–भाग से जुड़े जनमानस की स्थिति से अवगत कराने में साहित्य–जगत महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। ''हिंदी साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य एक नई विधा एवं चेतना है, जो प्रवासी लोगों की मनोभावना से जुड़ी है, जो न केवल नई विचारधारा है, बल्कि एक नई अंतर्दृष्टि भी है। जिसको साहित्य–जगत् में अपनी जगह बनाने में काफी समय लगा है।''1

माना जाता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य लेखन परंपरा की शुरुआत मॉरीशस से हुई थी। भारतीय मजदूर, जो भोजन की तलाश म नीलाभ के उस पार तक गए और दासता की जंजीरों में हमेशा के लिए जकड़ लिये गए। गुलामों–सा जीवन बिताते, तन से तो पराधीन थे, पर मन से स्वदेशी। दासता उनके भूगोल को बदल सकती थी, लेकिन वे उनकी जीवित प्राच्य–संवेदना में सुराख नहीं कर पाए। समय के पहिए मे जुतने के बावजूद वे अपने–आपको, अपनी संवेदन, अपनी सभ्यता–संस्कृति से अलग नहीं हो पाए थे। जिंदगी बेबश थी, पर जीवन की आशा निःशेष नहीं हुई थी। दूसरी संस्कृति पूरी तरह से हावी थी, पर वतन परस्ती दुर्द्धर्ष थी। इसलिए, वे कभी–कभी अपने जीवन के दुःख–दर्द को कागज पर उतार देते थे। अतः, प्रवासी हिंदी–साहित्य दासता की संघर्षात्मक गाथा का दस्तावेज बनकर उभरता है।

प्रवासी हिंदी उपन्यासकारों में अभिमन्यु अनत ने हिंदी उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थपित किया। मॉरीशस के हिंदी कथा–साहित्य ने भी काफी विकास किया है। उनके अब तक में उनतीस उपन्यास छप चुके हैं; यथा– 'हँसती वेदना'(अप्राप्य),'आंदोलन'(1971),'और नदी बहती रही'(1972), 'गाँधी जी बोले थे'(1972), 'लहरों की बेटी (1972), 'अपनी ही तलाश'(1972) 'जम गया सूरज'(1973), 'तीसरे किनारे पर (1976), 'तपती दापहरी'(1977),'लाल पसीना'(1977), 'चौथा प्राणी'(1978),'कुहारे का दायरा'(1978), शेफाली'(1979), 'हड़ताल कब होगी'(1979), 'चुन चुन चुनाव'(1981), 'अपनी–अपनी सीमा'(1981), 'पर पगडंडी नहीं मरती'(1983), 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग'(1986), ' फैसला आपका'(1986), 'मुखिया पहाड़ बाल उठा'(1987), 'शब्दभंग'(1989), 'चलती रहो अनुपमा'(1998), 'आसमान अपना आँगन'(2000) 'अस्ति–अस्तु', 'पसीना बहता', 'अपनी ही तलाश', 'मेरा निर्णय', 'घर लौट चलो वैशाली', 'एक उम्मीद और', 'और पसीना बहता रहा'।

''उपन्यास के क्षेत्र में अभिमन्यु अनत वहाँ क 'उपन्यास सम्राट हैं। पहला उपन्यास 'और नदी बहती रही' सन् 1970 में छपा था तथा उनका नवीनतम उपन्यास 'अपना मन उपवन' उनकी अंतिम औपन्यासिक कृति मानी जाती है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'लाल पसीना' सन् 1977 में छपा था जो भारत से गए गिरमिटिया मजदूरों की मार्मिक कहानी ह। उनके कई उपन्यास का अनुवाद दुनिया की कई भाषाओं में हो चुके हैं। 'लाल पसीना' उपन्यास की दो कड़ियों के रूप में–'गाँधी जी बोले थे' (1984) तथा 'और पसीना बहता रहा' (1993) हैं, जो 'लाल पसीना'

की उत्तरकथा के रूप में जानी जाती है। भारत से बाहर हिंदो में इस त्रिखंडी उपन्यास को लिखने वाले वे एकमात्र उपन्यासकार हैं। जिनमें भारतीय मजदूरों की महाकाव्यात्मक गाथा का जीवंत वर्णन हुआ है। उन्होंने 'लाल पसीना' में जिन प्रवासी भारतीयों की शोषणग्रस्त जिंदगियों की दासता को प्रस्तुत किया था, इस उपन्यास में वह दासतापूर्ण जीवन के संघर्षात्मक परिणति को प्रस्तुत करता है। मॉरीशस के सुप्रसिद्ध हिंदी कथाकार अभिमन्यु अनत का यह उपन्यास मॉरीशस की प्रवासी धरती पर भारतीयों की शोषनग्रस्त जिंदगी के अनेकानेक अँधेरों का दर्दनाक दस्तावेज है। लेकिन इस उपन्यास में हम उसी जिंदगी और उसी अँधेरे से चेतना एक नया सूर्योदय होता हुआ देखता है। हजारों–हजार शोषित मजदूर किसानों के बीच होने वाला सूर्योदय शिक्षा तथा संगठन का प्रतीक है और इसी का मूर्त रूप है–तथा नायक 'प्रकाश'। शेशन से उसने दक्षिण अफ्रीका से लौट रहे गाँधी जी को सना था, उन्हीं के आदर्श से प्रेरित है। अन्याय के अस्वीकार के लिए शिक्षा और राजनीति का स्वीकार तथा मानवोचित अधिकारों की प्राप्ति के लिए संगठन और संघर्ष।

'गाँधीजी बोले थे' उपन्यास में उन्होंने सामाजिक–राजनीतिक समस्याओं को सामने रखा है। मॉरीशस की भूमि, वहाँ की संस्कृत, वहाँ के अंचल, वहाँ की सन्तानें सभी उनकी लेखकीय आत्मा के अंश हैं। वे अपने देश के वर्तमान की त्रासदियों, क्रिया–कलापों, औपनिवेशिक दबाव और विसंस्कृतीकरण की दुष्प्रवृत्तियों का बड़ी यथार्थता के साथ उद्‌घाटन करते हैं तथा जीवन–मूल्यों तथा आदर्शवाद को साथ लेकर चलते हैं।''[2]

''अभिमन्यु अनत के 'और नदी बहती रही', 'आंदोलन', 'तपती दोपहरी', 'जम गया सूरज' जैसे उपन्यासों में जाति–व्यवस्था, ऊँच–नीच की भावना देखी जा सकती है। ऊँची जाति का व्यक्ति, नीचि जाति के यहाँ संबंध रखने में किस प्रकार का भेदभाव रखता है, उनके उपन्यास 'कुहासे का दायरा' में द्रष्टव्य है। रूपलाल भगत के यहाँ जब धनेश नामक पात्र चाय पी लेता है तो उसे अपने पिता से खरी–खोटी सुनना पड़ता है–''जिसके यहाँ गाँव के चमार पानी नहीं पीता, उसके यहाँ बाबू जी होकर तूने चाय पी ली।''[3] 'तपती दोपहरी' उपन्यास के कथानायक की शादी उनकी प्रेमिका से इसलिए नहीं हो पाती है कि वह ऊँची जाति का नहीं है। कथा–नायिका सवर्ण है और कथा–नायक अवर्ण। इस पर कथा–नायक 'दयानंद' अपने एक पत्र में लिखता है–''अपने घर पर तुमने मेरा अपमान सिर्फ इसलिए किया क्योंकि मैं छोटी जाति का लड़का हूँ और तुम्हारी बेटी उच्च जाति की है।''[4] वैवाहिक संबंधों में भी जाति–धर्म आड़े आता है। 'शब्द भंग' उपन्यास में 'विभा' एवं 'रोबीन' अलग–अलग धर्म के हैं। विभा हिंदू परिवार की लड़की है, जबकि रोबिन ईसाई। सामाजिक प्रतिरोध के बावजूद उनका विवाह होता है, किंतु थोड़े से विरोध के पश्चात् उनका विवाह समाज स्वीकार कर लेता है। बिखरते दांपत्य संबंधों को भी लेखक ने अनेक उपन्यासों में उठाया है। सन् 1983 में प्रकाशित उपन्यास 'अपनी–अपनी सीमा' में आलोक और सीमा–पात्रों के माध्यम से इस विषय को उठाया गया है। पति की थोड़ी–सी आर्थिक असंतुष्टि कैसे दांपत्य जीवन का विघटन कर देती है, उपन्यास का मूल विषय है। 'कुहासे का दायरा' निरंतर हो रहे ओद्योगिक विकास से समाज में दो तरह की संस्कृतियों का जन्म के द्वैत से उपजे सामाजिक, राजनीतिक खुदगर्जी में साधारण मानव किस तरह पिस रहा है, इसी समस्या को उपन्यासकार ने बड़ी कुशलता से अपनी कथा–वस्तु में प्रस्तुत करते हैं।

नारी–जीवन के विविध पक्ष भी अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मिलते हैं। नारी की दुर्दशा, शोषण, दमन, अस्मिता जैसे विषयों को लेखक ने अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। लाल पसीना उपन्यास में नारी–शोषण की अभिव्यक्ति हुई है। 'चौथा प्राणी' उपन्यास में ग्रामीण जीवन का चित्रण है, जिसमें एक निर्धन परिवार की कहानी है। चरित्रहीन में वेश्या जीवन का मार्मिक चित्रण है इसमें राजनेता तो भ्रष्ट और चरित्रहीन हैं, जबकि वेश्या अपने देशप्रेम को दर्शाती है। 'चुन–चुन चुनाव' की नारी पात्र फ्रांस्वाज अपनी सहेली स्वरित को पत्र लिखकर प्रेरणा प्रदान करती है। वे कहती हैं–''मैं यह कहने लगी हूँ कि मर्द चाहे तो अपने प्यार, पैसे और हमदर्दी को अपने पास रख ले, पर हमें हैसियत दे दे। हमें अपना अख्तियार खुद वसूल करना होगा।''[5]

अभिमन्यु अनत का अधिकांश उपन्यास आर्थिक असमानता, रंग–भेद नीति, मजदूरों का शोषण,

राजनीति में फैले भ्रष्टाचार, आधुनिकता की आड़ में आई पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव, बेरोजगारी, जात–पात तथा ऊँच–नीच की भावना तथा नारी–जीवन की समस्याओं की कथा कहते हैं। वे हमेशा दलित, शोषित, मजदूर व गरीबों के पक्ष में खड़े रहते हैं। हड़ताल कल होगी मुड़िया पहाड़ बोल उठा, जम गया सूरज आंदोलन आदि उपन्यासों में मजदूरों की अनेकानेक समस्याओं, उनके आंदोलन तथा जागृत युवा–पीढ़ी का चित्रण देखा जा सकता है। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' में मजदूरिन मिल–मालिक के अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करती है और अपनी माँगों को स्वीकार करने तक हड़ताल जारी रखती है। अंततः उनकी हड़ताल सफल होती है। 'जम गया सूरज' में मजदूर मालिक के शोषण के विरोध में हड़ताल पर जाता है तो वहीं 'हड़ताल कल होगी' में गोरे–काले लोगों के भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष का वर्णन है। इस कड़ी में आंदोलन उपन्यास की कथावस्तु भी जुड़ी है जिसमें सामाजिक न्याय एवं मजदूरों की प्रतिष्ठा के लिए युवा आंदोलन चलता है। 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग' उपन्यास में आधुनिक सभ्यता की बाढ़ में बहने वाली जनता के साथ मॉरीशस के प्रवासी भारतीयों की संस्कृति, सभ्यता और भारतीयता के बह जाने का चित्रण मिलता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने धरती का स्वर्ग माने जाने वाले मॉरीशस का असली रूप प्रस्तुत करते हुए उस स्वर्ग में विद्यमान गरीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार और वेश्यावृत्ति आदि समस्याओं को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।'[6]

अभिमन्यु अनत अपने उपन्यासों में हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति तथा हिंदी भाषा को प्रश्रय देते हैं साथ ही इसके अतिरिक्त हिंदीतर संस्कृति को भी। प्रत्यक्षतः वे किसी धर्म विशेष के अनुयायी नहीं हैं और न ही किसी के विरोधी। धर्म उनके लिए सांस्कृतिक उत्थान के अलग–अलग पहलू हैं, जो उनके उपन्यास–साहित्य में सर्वत्र दिखाई पड़ता है। बल्कि वे धर्म के नाम पर सांस्कृतिक रूढ़ियों के वशीकरण का विरोध करते हैं। वे संस्कृति को राजनीति से अलग रखने के पक्षधर हैं। वे जाति, रंग तथा भाषा पर आधारित सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर को समाज की जड़ों तक पहुचने का अवसर नहीं देते हैं।

साहित्यिक रचनाओं के द्वारा कोई भी रचनाकार केवल अपने समाज की समस्याओं को ही चित्रित नहीं करता, बल्कि अपने समाज के इतिहास, अपनी परंपरा तथा संस्कृति इत्यादि को भी बिंबित करता है। मॉरीशस में आरंभिक हिंदी रचना से लेकर वर्तमान समय तक हिंदी साहित्य का व्यापक संसार निर्मित हुआ है। वे मॉरीशस के ही नहीं, हिंदी के प्रवासी साहित्य के शीर्षस्थ लेखकों में से एक हैं। मॉरीशस में अप्रवासी भारतीयों की संख्या सर्वाधिक है। शायद यही कारण है कि वहाँ अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी भाषा और साहित्य का अत्यधिक विकास हुआ। भारतीय मूल के होने के कारण उनके साहित्य में हमें यत्र–तत्र भारतीय संस्कृति का चित्रण दिखाई देता है। मॉरीशस की जनसंख्या में भारतवासियों की संख्या सर्वाधिक होने के करण वहाँ की परंपराएँ, नृत्य, धर्म, कला, संगीत, शिल्प, भाषा, पर्व–त्योहर, रीति–रिवाज, खान–पान इत्यादि पर भारतीय संस्कृति की स्पष्ट छाप है। वहाँ रहने वाले भारतवासियों में आज भी भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा लगाव है, जो उनके उपन्यासों में दिखाई देता है। 'चलती रहो अनुपमा' की पात्र 'चित्रा' कला और नृत्य सीखने भारत जाती है, भारत में उनके गुरु भारतीय संस्कृति के प्रति उनका प्रेम देखकर कहता है–''तुम्हारे लोग इस भारत–भूमि को डेढ़ सौ वर्ष पहले उस द्वीप में पहुँचे थे। लोग जब इस तरह अपनी भूमि से उखड़कर दूर–दराज के किसी मुल्क में पहुँचते हैं, तो कुछ दिनों तक तो उनकी पहचान और संस्कृति उनके बीच बनी रहती है और फिर वक्त के साथ लोग उस जड़ से कट जाते हैं। पर यह क्या चमत्कार है कि तुम आज भी भारतीय कला, संस्कृति और अस्मिता के साथ इस तरह जुड़ी हुई हो?''[7] जब इस तरह की बातें 'चित्रा' अपने गुरु के मुख से सुनती है तो वह मॉरीशस में रहने वाले भारतवासियों का प्रतिनिधि बनकर अपने गुरु से जो कहती है, वह वास्तव में अनत का भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम है–''यह सही है हमारे लोग बहुत पहले अपनी जन्मभूमि को छोड़ उस अनजान द्वीप में पहुँचे थे। मैं तो चौथी पीढ़ी की हूँ और भारतीय संस्कृति केवल मेरे ही अंदर जीवित नहीं, बल्कि कुछ मूल्य, कुछ गरिमा जो यहाँ से लुप्त होती प्रतीत हो रही, वहाँ आज भी जीवित हैं। वहाँ के हर भारतीय

वंशज के घर में उनकी भारतीय पहचान बनी हुई है।''[8]

कमल किशोर गोयनका के शब्दों में–''अभिमन्यु अनत में तुलसीदास की लोकमंगल की दृष्टि, कबीर की दो–टूक कथन–शैली, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसी संपादकीय दायित्व, निराला का विद्रोह, और तेज, प्रेमचंद की सामाजिकता, राष्ट्रीय, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि एवं दासत्व से मुक्ति, जयशंकर प्रसाद का नाटकीय कौशल तथा स्वतंत्रयोत्तर कुछ कवियों की आम आदमी की नियति और मानव–अधिकारों के प्रति घोर चिंता का गहरा भाव संश्लिष्ट रूप में विद्यमान हैं।''[9]

सामान्यतः अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यास के माध्यम से भारतीय संस्कृति तथा हिंदी को विश्वव्यापी बनाने में तथा समसामयिक चिंतन को गहराई से चित्रित किया है। उन्होंने कथाक्रम में उन सभी प्रश्नों को उरेहा है, जो एक प्रवासी जीवन की मूल समस्या हेती है। उनके औपन्यासिक–प्रश्नों से तत्कालीन सामाजिक– राजनीतिक व्यवस्थाओं की नींव हिलती दिखाई पड़ती नजर आती है। कमल किशोर गोयनका ने लिखा है कि ''अनत में सामयिक यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ महाकाव्यात्मक प्रतिभा है, जो अपने समाज की संस्कृति, अस्मिता, अस्तित्व तथा स्वाधीनता के महत् संघर्ष का जीवंत चित्रण करती है तथा उपनिवेशवादियों के क्रूर, नृशंस तथा घातक अत्याचारों के बीच अपनी भारतीयता, भाषा और संस्कृति को जीवित रखती है। अनत ने अपने देश के गूँगे चीखते इतिहास को इसी कारण 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे' तथा 'पसीना बहता रहा' उपन्यासत्रयी में प्रस्तुत किया, जो महाकाव्यीय ऊर्जा एवं संघर्ष से परिपूर्ण है। वे वास्तव में अपने देश के भूमिपुत्र हैं तथा वहाँ की जातीय परंपरा के राष्ट्रीय उपन्यासकार हैं। वे यथार्थवादी हैं, लेकिन जीवन–मूल्यों तथा आदर्शवाद के साथ हैं। यही दृष्टि उन्हें प्रेमचंद के समरूप बनाती है।''[10]

संदर्भ

1. प्रवासी हिंदी साहित्य के विविध आयाम; सं. प्रो. प्रदीप श्रीधर, विद्या प्रकाशन–कानपुर, 2018; पृ.सं.–345
2. भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ; सं. प्रो. रवींद्र कालिया, हिंदी अनुभाग, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, 2012; पृ. सं.–154–55
3. कुहासे का दायरा; अभिमन्यु अनत; राजपाल एंड संस. दिल्ली, 1978; पृ.सं.–39
4. तपती दोपहरी; अभिमन्यु अनत, सरस्वती बिहार, नई दिल्ली, 1977; पृ.सं.–135
5. चुन चुन चुनाव; अभिमन्यु अनत, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं.–48
6. प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा एवं चिंतन; सं. प्रो. प्रदीप श्रीधर, विद्या प्रकाशन–कानपुर, 2018; पृ.सं. –304–305
7. चलती रहो अनुपमा; अभिमन्यु अनत, किताब घर–दिल्ली, 1998; पृ.सं.–308
8. उपरिवत्।
9. अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि रचनाएँ; कमल किशोर गोयनका; सामयिक प्रकाशन–दिल्ली, 2006; पृ.सं.–33
10. भारतीय साहित्य कोश; पृ.सं.–652–53